Shikshan Sanshodhan : Journal of Arts, Humanities and Social Sciences ISSN(o): 2581-6241
Monthly, Peer-Reviewed, Refereed, Indexed Journal Impact Factor: 6.471
Volume - 6, Issue - 4, April - 2023 Publication Date: 25/04/2023

DOIs:10.2018/SS/202304007 --:-- Research Paper / Article / Review

विद्यालयों में क्रिया शोध क्यों ?

मनीष कुमार
सहायक अध्यापक,
उच्च प्राथमिक विद्यालय दहेमूँ , विकास क्षेत्र उझानी , बदायूँ , उत्तर प्रदेश
Email – manishbudaun88@gmail.com

सारांश: प्रस्तुत लेख में विद्यालयों में क्रिया शोध किस प्रकार से लागू हो सकता है एवं यह विधि विद्यालयों के लिए कितनी उपयोगी सिद्ध हो सकती है इस पर चर्चा कि गई है । इस लेख में बताया गया है कि है क्रिया शोध उन विद्यालयों के लिए एक सरल,प्रभावी उपकरण है जो अपनी चुनिंदा समस्याओं तथा किए जाने वाले कार्य मे निरंतर सुधार करना चाहते हैं । छात्रों कि सफलता सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों कि सहभागिता और संगति के आधार पर छात्रों के आंकड़ों का विश्लेषण करने और उन पर मनन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है ।

मुख्य बिन्दु: क्रिया शोध , विद्यालय , शिक्षक एवं शिक्षार्थी ।

1. प्रस्तावना :

विद्यालयों कि समस्याओं को समझने और क्रिया करने के लिए क्रियाशोध एक श्रेष्ठ विधि के रूप मे स्थापित प्रक्रिया है । क्रिया शोध उन विद्यालयों के लिए एक सरल,प्रभावी उपकरण है जो अपनी चुनिंदा समस्याओं तथा किए जाने वाले कार्य मे निरंतर सुधार करना चाहते हैं । छात्रों कि सफलता सुनिश्चित करने के लिए शिक्षकों कि सहभागिता और संगति के आधार पर छात्रों के आंकड़ों का विश्लेषण करने और उन पर मनन करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है । छात्रों के आंकड़ों से जो कुछ प्राप्त होता है उसको सहभागिता आधारित अन्वेषण , मनन और संवाद के लिए संकाय के सदयों को अवसर प्रदान करके विद्यालयों कि उन समस्याओं का , जिनका वे सामना कर रहे हैं , अपने शैक्षिक विकास तंत्र कि पुनः रचना के लिए प्रोत्साहित किया जाता है । क्रियाशोध के ज्ञान और कौशल का प्रयोग करने से शिक्षक एक समालोचनात्मक और मननात्मक अभ्यासी बन सकता है । यह अधिगम और उपलब्धि दोनों को महत्व प्रदान करने में सहायता करता है । क्रियाशोध के द्वारा सिद्धांत और व्यवहार तथा शोध और अभ्यास के बीच के अंतराल को समाप्त करना संभव है ।

2. क्रिया शोध क्या है ? :

क्रियाशोध सामाजिक बोध का एक रूप है जिसका संबंध सामूहिक जीवन के सामान्य नियमों के अध्ययन के साथ वैज्ञानिक तथ्य खोजने में सम्मिलित विशिष्ट परिस्थिति को पहचानने से है ।

क्रिया शोध और प्रशिक्षण एक साथ मिलकर पाठ्यक्रम संबंधी अधिगम ,शिक्षण तथा छात्र अधिगम का एक त्रिभुज बनाते है । क्रियाशोध का अभ्यास के लिए कौशल विकसित करने , उसको समझने और कार्य करने के लिए प्रतिबद्धता निर्माण करने में बहुत महत्वपूर्ण प्रभाव है ।

स्वयं अपने सामाजिक या शैक्षिक अभ्यासों कि तार्किकता और औचित्य को सुधारने के लिए और उन अभ्यासों और परिस्थितियों मे भागीदार के द्वारा चलाई जा रही सामूहिक स्व-मनन अनुसंधान का एक रूप क्रियाशोध है ।

“क्रियाशोध शैक्षिक गुणवत्ता विकास का एक प्रारूप है जो सहभागितात्मक खोज ,मनन और विचा विमर्श को बढ़ावा देता है ।“ क्रिया शोध शिक्षक द्वारा उनके अपने शिक्षण से संबंधित छात्रों के अधिगम का अध्ययन है । यह एक प्रक्रिया के बारे में कुछ सीखने और छात्रों के अधिगम में आये सुधार की पड़ताल को निरन्तर चलाने का अवसर देता है।“ **) रालिंसन एन्ड लिटिल(2004**

“क्रियाशोध का विचार यह है कि शैक्षणिक समस्या और मुद्दों को श्रेष्ठत्तम ढंग से पहचाना जा सकता है और यह खोजा जा सकता कि क्रिया कहाँ पर है ?कक्षा कक्ष तथा विद्यालय परिस्थितियों में शोध की गतिविधियों में जो लोग कार्य कर रहे है , उनका समाकलन कर के जो परिणाम प्राप्त होते हैं, उनको तुरन्त ही लागू किया जा सकता है ।“ **(गुस्की,2000)**

इस प्रकार क्रिया शोध एक निरंतर औऱ मननात्मक प्रकिर्या है जहां शिक्षक कक्षाकक्ष के आंकड़ों द्वारा दर्शायी गयी तथा छात्रों की आवश्यकताओं पर आधारित निर्देशात्मक निर्णय लेते हैं ।

क्रियाशोध की प्रक्रिया में चार सोपान होते है :

- समस्या को पहचानना
- क्रियाशोध की योजना विकसित करना और उसको लागू करना
- आंकड़े संकलित करना और विश्लेषण करना
- परिणामों का प्रयोग और विमर्श करना।

3. क्रियाशोध का प्रयोग क्यों ? :

क्रियाशोध शिक्षकों और प्रशासकों को यह समझने का अवसर प्रदान करता है कि उनके विद्यालय में क्या हो रहा है । यह प्रक्रिया निर्णय लेने का चक्र स्थापित करती है जो विद्यालय और कक्षाकक्ष में निर्देशात्मक योजना बनाने में मार्गदर्शन करती है । शोध की आवश्यकता और कक्षाकक्ष में क्रियाशोध चलाने के लिए वातावरण स्थापित करना विद्यालय प्रशासन की जिम्मेदारी है । यह प्रक्रिया निरंतर चले और छात्रों के अधिगम पर प्रभाव डाले , इसके लिए प्रधानाध्यापक की सहायता बहुत महत्वपूर्ण है ।

साथ ही प्रधानाध्यापक को शिक्षकों के लिए प्रभावी अधिगम वातावरण बनाने के लिए निम्नलिखित घटक सुनिश्चित करने चाहिए :

- सहयोगात्मक क्रियाशोध के लिए विद्यालय में पर्याप्त और निरंतर सुअवसर प्रदान करना ।
- किसी क्रियाशोध के विद्वान अनुशिक्षक द्वारा शिक्षकों के लिए एक सहायता तंत्र बनाना।
- छात्रों और शिक्षकों के लिए उच्च आकांक्षाएं निर्धारित करना।
- संकाय सदस्यों के लिए शैक्षिक साहित्य, मूल्यांकन के उपकरण और अन्य निर्देशात्मक साधन निर्माण करना ।
- वर्ष भर में संकाय सदस्यों के लिए अनेक साझे सत्रों की योजना करना,जहाँ वे क्रियाशोध और उसके निष्कर्षों को प्रस्तुतु कर सकें।
- सभी संकाय सदस्यों को भाग लेने के जिसमें प्रधानाध्यापक और शिक्षक भी सम्मिलित हैं, प्रोत्साहित करना।

निरंतर अधिगम की सहायता विद्यालय के नेतृत्व करने वालों का अतिमहत्वपूर्ण कार्य है । परस्पर विश्वास और सहयोग किसी भी विद्यालय के महत्वपूर्ण घटक हैं जो क्रियाशोध के द्वारा निर्देशात्मक दुविधाओं का समाधान करने पर ध्यान देने के लिए प्रयास करते हैं।

क्रियाशोध की प्रक्रिया के अंतर्गत शिक्षक अपने अध्ययन के लिए एक छात्र, छात्रों का एक छोटा समूह , एक कक्षा या अनेक कक्षाओं या पूरे विद्यालय को चुन सकते है । विद्यालयों में भागीदारी का स्तर और शोध केंद्र ,सहायता के स्तर, शिक्षकों की रुचि और विद्यालय की आवश्यकताओं पर निर्भर करता है।

<u>कल्हाऊन (1993)के अनुसार क्रियाशोध की तीन कार्य विधियाँ होती हैं :-</u>

व्यक्तिगत शिक्षक शोध, सहयोगात्मक क्रियाशोध और विद्यालय व्यापी क्रियाशोध।

वातावरण भिन्न होने पर भी क्रियाशोध की प्रक्रिया वही रहती है। यह प्रक्रिया एंकक्षा कक्ष/ विद्यालय की समस्याओं की पहिचान करने के लिए आंकड़ो का उपयोग करती हैं, कार्य की योजना बनाती और लागू करती है, कार्य की योजना बनाती और लागू करती हैं, आंकड़ों का संकलन और विश्लेषण, परिणामों का उपयोग करना और उनको एक दूसरे के साथ साझा करना और छात्रों के अधिगम को निरंतर सुधारने के लिए निर्देशात्मक निर्णय लेती है।

<u>व्यक्तिगत शिक्षक का शोध</u>

यह शोध किसी कक्षाकक्ष के अंदर की समस्याओं या अन्य मुद्दों को अध्ययन करने पर केंद्रित होता है। जो शिक्षक एकल शोध में लगा होता है, उसको अपने साथिओं और प्रशासन की ओर से क्रियाशोध विषय पर विचार –विमर्श करने या दूसरो के साथ साझा करने के लिए सहायता प्राप्त हो भी सकती है और नहीं भी । यद्यपि एक शिक्षक सीधे अपने आपको क्रियाशोध में लगा सकता है परंतु उसको विद्यालय या जिले से विद्वान शिक्षाविदों की सहायता की आवश्यकता रहती है , जिससे कि उसका शोध सफल हो सके ।

<u>सहयोगात्मक क्रियाशोध</u>

यह एक या एक से अधिक कक्षाकक्षों की समस्या कठिन प्रकरणों के अध्ययन पर केंद्रित होता है । शिक्षक परस्पर सहयोग कर सकते हैं और एक विशेष समस्या को विभिन्न ढंग से अध्ययन करने के लिए मिलकर कार्य कर सकते हैं ।

- छात्रों के एक विशेष समूह का अध्ययन करने के लिए एक ही कक्षा के साथी शिक्षक ।
- ग्रेड स्तर की समस्याओं पर केंद्रित करते हुए शिक्षकों का एकदल ।

- किसी एक विषय का निर्देशात्मक विधि का अध्ययन और उसकी जानकारी प्राप्त करने वाला एक शिक्षक जिले या विकास क्षेत्र के शैक्षणिक अधिकारी ।
- एक ही निर्देशात्मक समस्या का अध्ययन करने वाले एक ही विद्यालयके शिक्षकों का समूह ।

सहयोगात्मक क्रिया शोध कि यह विधि एक संयुक प्रयास है क्योंकि इसमें अध्ययन के एक विशिष्ट क्षेत्र में लगे हुए एक से अधिक शिक्षक सम्मिलित होते हैं । इसमें साझेदारी और वार्ता के लिए अधिक अवसर प्राप्त होने कि संभावना रहती है ।

विद्यालय व्यापक क्रिया शोध

यह एक सुधारात्मक पहल है । विद्यालय के आंकड़ों से निर्धारित कि गई विशिष्ट समस्या के अध्ययन में विद्यालय संकाय का प्रतिएक सदस्य सम्मिलित होता है । इस विधि मे प्रशासकों , वरिष्ठ शिक्षकों और कर्मचारियों कि ओर से सहायता कि आवश्यकता होती है परंतु इसका परिणाम व्यापक परिवर्तन ला सकता है । विद्यालय व्यापी सफल क्रियाशोध विद्यालय कि सुधारात्मक योजना के अंतर्गत सम्मिलित सभी कार्यों से प्रत्यक्ष रूप से संबंधित होता है ।

4. विद्यालय में क्रिया शोध के लाभ :

विद्यालयों में क्रिया शोध लाभदायक है क्योंकि–

- यह किसी भी समस्या का पता लगाने में प्रयोग किया जा सकता है ।
- एक उपकरण के रूप में यह बहुमुखी और आसानी से प्रयोग हो सकता है ।
- यह साझी सूझबूझ और कार्य विधियों को बढ़ावा देता है ।
- किसी विशिष्ट विद्यालय वातावरण के लिए कार्य विकसित होते हैं और इसलिए उनके सफल होने कि अधिक संभावना है ।
- विद्यालय प्रवंध समिति के सदस्य अपने कार्यों के प्रति प्रतिबद्ध होते है जिनको उन्होंने अपने आप झी स्वीकार किया होता है ।
- कार्य परिष्कृत हो जाते हैं और शोध के चक्र द्वारा उनमें सुधार आ जाता है ।
- परिवर्तन को प्रतिभागियों द्वारा स्वीकार और व्यवस्थित किया जाता है ।
- सहभागिता विश्वास और सहायता निर्माण करती है ।
- इसमें छात्र , शिक्षक, अभिभावक, अधिकारी और अन्य लोग भी भाग ले सकते हैं ।
- बाह्य सहायता और विशेष योग्यता सम्पन्न व्यक्तियों को भी आमंत्रित किया जा सकता है ।

5. विद्यालयों में क्रिया शोध कैसे आरंभ करवाएं ? :

क्रिया शोध चक्र के किसी भी बिन्दु से भी आरंभ हो सकता है परंतु सामान्य रूप से यह किसी विशेष समस्या और परिस्थिति में सुधार लाने के लिए कार्य करने कि इच्छा से उभर कर आता है । विद्यालय समुदाय में अनेक व्यक्ति परस्पर जुड़े प्रकरणों या ऐसी समस्याओं जिनकी सबको साझी चिंता है , पहचान सकते है ।

क्रिया शोध कि गतिविधियों के लिए निम्नलिखित जांच सूची का प्रयोग किया गया है । वर्णित सिद्धांतों कि संक्षिप्त रूपरेखा निम्नलिखित है–

- स्वयं सहभागिता
- व्यक्तियों के छोटे उत्साही समूह
- बैठकों का आयोजन और उचित प्रबंध करना ।
- सहयोगात्मक कार्य के लिए किसी विषय परक साझी समस्या पर कार्य करना ।
- योजना बनाने , कार्य करने , प्रेक्षण करने और गहन विचार करने के लिए समय सीमा निर्धारित करना ।
- सहायता कार्य के लिए व्यवस्था करना ।
- जब व्यक्ति अनुभव सीख रहे हों, उनके प्रति सहायक और उदार होना।
- सशक्त साक्ष्य की पड़ताल करने तथा उनके द्वारा दी गई सूचना की विधि के बारे में सचेत करना।
- परिवर्तन सामान्य रूप से मंद सामाजिक प्रक्रिया होते हैं, इसलिए सरंचना और अभ्यासों में परिवर्तन की दीर्घकाल की योजना बनाना।

- समूह के प्रतेयक व्यक्ति को कार्य में सम्मिलित करना जिससे कि वे समूची क्रियाशोध प्रक्रिया के लिए जिम्मेदारी को साझा कर सकें।
- उस भाषा और अवबोधन के विषय में , जो कि क्रियाओं को तथा उनके परिसीमन को एक आकार प्रदान करते हैं,उदार होना।
- भागीदार समूह और दूसरे रूचि लेने वाले व्यक्तियों के साथ प्रगति की चर्चा करना।
- इन तीन आयामों में प्रगति और परिस्थिति का विश्लेषण करना : भाषा/भाषण, गतिविधि/अभ्यास तथा सामाजिकसंस्था।
- परामर्शदाताओं और अन्य बाह्य व्यक्तियों को जो सामूहिक गतिविधियों में रुचि रखते है, सम्मिलित करना।
- मौखिक रूप से या लिखित वृत्त द्वारा प्रगति का विवरण देकर शैक्षणिक सिद्धांतों को समझना तथा अभ्यासों का प्रयास करने के लिए अन्य व्यक्तियों को आमन्त्रित करना।
- अन्य व्यक्तिगत संस्थागत विधियों के परिवर्तन की प्रक्रिया में किस प्रकार आगे गए हैं , उनका विमर्शात्मक और समालोचनात्मक विवरण पढ़ने के लिये समूह को प्रोत्साहित करना।
- मूल्यांकन की एक समीक्षात्मक विधि को निरंतर बनाये रखना कि क्या क्रियाशोध का प्रकल्प स्वयं को या इसमें लगे अन्य लोगों की सहायता कर रहा है।

इस सूची का प्रयोग स्वयं, दल के लिए क्रियाशोध की प्रणाली के स्मरण पत्र की भूमिका में है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :

1. एन आफ्टर स्कूल , रालिंसन एन्ड लिटिल , 2004, पृष्ठ -69.
2. शिक्षक विकास, गुस्की, 2000, पृष्ठ 78.
3. https://www.sciencedirect.com/science/article/pii/S1877042810001199 DATED 02.03.2023 TIME 11:00AM